

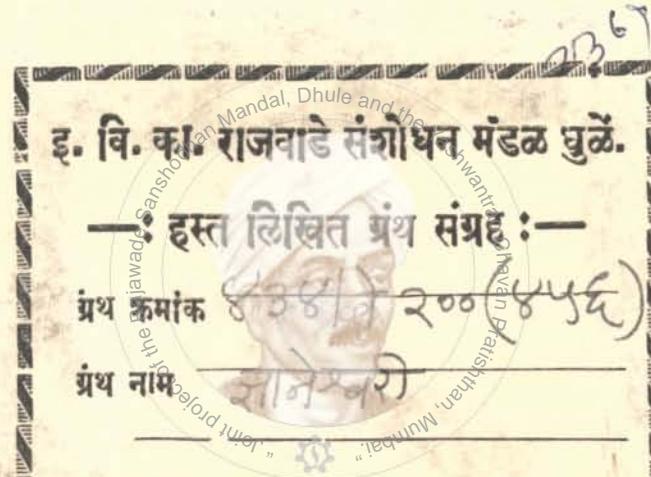
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—१ हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४३४/२०० (८५६)

ग्रंथ नाम शास्त्रीय

विषय H. वेदांग



सानेश्वरी

महाराष्ट्रः

and important



311

53819 200

(1)

॥ शानेस्वरिमगवदीतमुप्रांमआत्मसं ॥
यमयोगात्मप्रदमध्यात् ॥ अप्याय ॥

Joint Project of
Rajiv Gandhi Shikshan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Navnirman Foundation, Nasik

(2)

श्रीकृष्णनमः ॥ मगरायातें अणो संजये ॥ तोसि अपि प्रावो अवधारि जो ॥ कूल सांग
ति जो ॥ यो गरुप ॥ १ ॥ सहजे ब्रह्मरसावें पर गुणे ॥ कैं लैं अर्जुना लागी नारायणे ॥ किं नै विअव
स्तरिणा इषो ॥ पातलों आत्मा ॥ श्राको सद वादि नारवो इषो ॥ जै से ताहे लयां नो ये से विजे ॥
किं तैं विच्छिवि करुनि पाहि जो ॥ तवं अमृत हि आहे ॥ श्राते संआत्मा तुत्या उत्थां जाले ॥ जैं आउ मु
रित त फल वले ॥ तवं घृत राइ आणि तले ॥ हंस पासो तुले ॥ ३ ॥ तया संजय येणे बोके गयावे ह
दय वौ जवले ॥ जैं अवसरि आहे घेतले ॥ कुमराविया ॥ ४ ॥ हे जाणो नि मनि हांसे ला ॥ अणे
श्रा तारा मोहे नाशिला ॥ ये हंडि बोल तरिपाल जा ला अव मारिये ॥ धापरि तेसे कैसे नि
लो यिला ॥ जात्यं धाकैचे पाहिल ॥ तिविविये रुसघे यिल ॥ याणो निविहे ॥ ५ ॥ परि आपण वि
शिलि आपुला ॥ निकियापरी सं नोष ना ॥ जैं तो संबादुफावला ॥ कृष्ण अर्जुना वा ॥ ६ ॥ तेणे

(3)

अः हरः

आनंदावेनधालेपणे ॥ साभिप्रायें अंतः करणे ॥ आतं आदरेसिंहोडणे ॥ धृतेऽतयां ॥ शीतोगा
 ते मा जैष द्विवा ॥ प्रसंगु असै आयुणि वा ॥ जै साक्षिराणीविंश्मला-वा ॥ निवातु जाला ॥ १० ॥
 तैसें गीताथचिं सार ॥ जै विवे कांसि धन्वेपारा ॥ नाना योगविमवु फांगरा ॥ उद्घुत्तैं का ॥ ११ ॥
 जै आदि प्रकृतान्वेविमवणे ॥ जै शब्द ब्रह्मा सेन बोल्यो ॥ जै धोनि गीता वहून्वंगणे ॥ प्र
 रोहो पावे ॥ १२ ॥ तो अध्या वोहा साहा कां ॥ परिसाहित्या विया वरवा ॥ साधि जै लत्यणौ नि
 परिसावा ॥ चित्तेदउनि ॥ १३ ॥ माघामहाविबोलु कवति कै ॥ परिअमता तै होपैजो
 मिजिं कै ॥ रेसिं झक्षरें रासि कै ॥ मेविन् ॥ १४ ॥ जियै कोवलि कै न्वेनियौ ॥ दिसतिनदि
 कै तंरंगथोडै ॥ वै धै परिभलाविं बिक्षीडै ॥ जयान्वेनि ॥ १५ ॥ आयि कां राळ पणवियालो
 ला ॥ किं श्रवणि निलोति जिसा ॥ वोलें इद्धि यां लागे कंसा ॥ येकमेकां ॥ १६ ॥ सह जेश्वु
 ला ॥ १७ ॥ राः

(3A)

तहिंतुस्थातोषिजेरसि जालि॥ प्रभाविया॥ १८॥ आणीतेणं आपुलैपणत्वेनिमोहे॥ तुल्ये
 संवद्येतलै असा बोहे॥ त्पणौ निकै लियै सलगी चानोहे॥ आभार खुल्यां॥ १९॥ अहोतानयंति
 लागेसेटे॥ तर अधिकेविपालाफुटे॥ रोमेस्प्रभेदणवृद्धे॥ पठियेतयानेनि॥ २०॥ त्पणौ निमज
 लेंकरावनेन बोले॥ तुम्हेलपाकुपणनिहले तेवेत्लेहेजीजाणवले॥ यालागिबोलोमी॥
 २१॥ योहविं वांदिणीं पिकविजव आहेत्वेपाणी॥ किंवारशाघात आहेवाणी॥ हंहोंगमतासी
 गवसणी॥ यालिजैकवी॥ २२॥ आस्तीकां पांडी वोषिजाविनेलगे॥ नवनीतीं माषुलानरी
 गे॥ तेविलाजिलै॥ यार्याननिगोदेरवौनिज याते॥ २३॥ हें असोशब्द ब्रह्मजिये वाजे॥ शब्द
 मावळलयांनिवांतनिजैजे॥ तोगीतार्थुमहातियाबोलिजे॥ हापाडुकायी॥ २४॥ मरीरोमाहि
 जोमजधिवंसा॥ तोपुउतिं याविच्यकिआशा॥ जेंपिरवंकरानिसवाहशा॥ पठियेतेया

(4)

जः रा:
शाराम

लोवावें॥२३॥ तरिआतांच द्रोपीसौनि निवितें॥ जे अमला दुमि जिवै वितें॥ तेणे अवधाने किंजो
 वाटते॥ मनोरथां मासयां॥ २४॥ कांजें दिविवातु मवावरिधा॥ निसक कार्यासि द्विमनिपिके॥ यह
 विं कों कै। लाउ भ्रष्टु सुकें॥ जरिउ दास तु द्या॥ २५॥ सहजें ही अवधारां वगत वा अवधाना
 वा होय वारा॥ तरि हौंदै पेलति अक्षरां॥ प्रमयां विं॥ २६॥ अर्थ बोला विवाट पाहो॥ लेय अ
 भिप्रावो विआ क्षिप्राया तें विये॥ ज्ञावाचा फुलौ रहो तु जाये॥ मतिवरि॥ २७॥ त्यणौ निमं
 वादा वासु वायो ठके॥ तरी हृदयाकाश मार स्वतें कोले॥ आण्ही श्रोता दुमि ता सरी वि
 तु ले॥ माउ लार सु॥ २८॥ अहो चंद्र कांतु द्रवता तिकिर होये॥ परिते हात वटी चंद्रां कं आहे॥
 त्यणो ने वगता चिंतो वगता नक्हे॥ श्रोते नविण॥ २९॥ पर आतां आमते गोडां करावे॥
 ये संहें तांडुलं कायि सया विनवावे॥ साधि खडे न कां प्रार्थी वे॥ सूत्रधाराते॥ ३०॥ कायि तो बा

जः गता:
॥३॥ राम

(GA)

ज्ञानिउपसर्वेत्यगे ॥ आतां संगैनकायश्चरंगे ॥ निरुपिलेजे ॥ ३१ ॥ तेवद्विहक्किनांकवा
 उं ॥ त्रयोनिबोलिं विपायेमापउ ॥ परनिवृत्तिल्पादीपउजिवउ ॥ देवतानभो ॥ ३२ ॥ निदि
 गिहनपविजे ॥ तेदिभिविणदेविजे ॥ जरिजातिंद्रियलाहिजे ॥ शानबक ॥ ३३ ॥ नालसे
 नालरिधातुर्वाहिनजोडे ॥ तेलोहीविष्ट्वरसांपउ ॥ जरिदेवयोगेत्वहे ॥ परिसुहाता ॥ ३४ ॥
 तेसीसद्गुरुल्पाहौये ॥ तरीकारितांकायेआपुनहे ॥ त्रयोनितेअपारमालेओहे ॥ शा
 नदेवोत्थणे ॥ ३५ ॥ तेणेकारणेमीबोलैन ॥ बोलतंजसुपत्तिरूपदाविन ॥ अतिंद्रियपरिको
 गविनाइंद्रियांकरवि ॥ ३६ ॥ श्लोका ॥ श्लोका ॥ वानुवान्व ॥ अनाश्रितः कर्मफाकंकार्यकर्म
 करोतिय ॥ ससंन्यासत्त्वयोगत्तनभिर्गिनवाक्तिः ॥ ३७ ॥ श्लोका ॥ आशिकायश
 आओदायी ॥ शानवैराम्यरेष्ये ॥ हेसाहिगुणवर्य वसनाजेष्ये ॥ ३८ ॥ त्रयोनिताभ

(5)

अः द्वाः

गवंतु ॥ जोनिसंगाना सांगतु ॥ तोष्यणे पार्थदचवित् ॥ होयिं आतं ॥ ४८ ॥ आयिकैं योगी आ
 णि सन्यासी जनि ॥ हेये कवि सिना नेमणे माने ॥ ये हविं विं चारिजति जवं दहिं ॥ तवं ये
 कविते ॥ ३९ ॥ सांडि जेदु जया नामा नामा आसा रु ॥ तरियो गुतौ विमन्यासु ॥ पाहानं ब्रालि
 नाहिं अवकाशु ॥ होहिं माजि ॥ ४० ॥ जैसेना वांचेनि अनारिसैपणे ॥ यकापुरुषानं बौला
 वणे ॥ कांदो निमार्गजाणे ॥ येकामिगया ॥ ४१ ॥ आनारिये कविउदक सहजे ॥ परि
 सिना नाघरिं परिजे ॥ तैसेमि न खहें जाणि ॥ योगसन्यासनि ॥ ४२ ॥ तैकैं सवृक्ष स
 मतें जगं ॥ अर्जुना मानो वियोगी ॥ जोकर्मकरुनिरागी ॥ नहेनिफलि ॥ ४३ ॥ जैमि
 भहिउदिजे ॥ जाने अहे बुद्धिविष्णु सहजे ॥ आणिते यिं वित्तियें बिजे ॥ अपैश्चिना ॥ ४४ ॥
 तैमा अन्वयान्वेन आधारे ॥ जानिवेन अनुकरे ॥ जैजैपि अवसरे ॥ करणो यावे ॥ ४५ ॥

सानः भीः ॥ ३ ॥

(5A)

तैत्तेसंउविचकारी॥परिसाटोपनहे शरीरा॥आणेबुद्धिहिकरूनिफकवेरी॥जायेसिना
 ॥४६॥ रेसातोविसन्यासे॥पार्थीपरियसै॥तौनिफरवंसेनमि॥योगीश्रु॥४७॥
 वात्मूनउसितकर्मप्रासंगाका॥तेयोदंत्यणहेसंतिनबङ्कक॥वरिटाकोटाकिआणीका
 येक॥मांतित्विनो॥४८॥ जैसा क्षाकुनियांलेपुयेकु॥सेवेविलाविजेआणीकु॥तैसेनआ
 श्रयान्वापायेकु॥वित्वेवायां॥४९॥ अहस्ताश्रमविवोझं॥कपाळिंआधिचिओहेमजे
 कितेसिसन्याससवारेविजे॥सरियेपुउतिं॥५०॥ त्यणोनिअग्निसेवानसंतिलं॥कर्मसि
 रेखानोलंतिलं॥आहेयोगसुखस्वसाचता॥आपणपावि॥५१॥ श्लोक॥ चंसन्या
 समितिप्राञ्योगंतविदिपांउवात्यसन्यत्वंसंकल्योगीमवतिवश्रन॥५२॥ दीका
 जायिकैसन्यासीलोवियोगी॥रेसियेकवाक्यतेविजेजगी॥ गुटिउमिलिअनेगं॥ शास्त्रां

(6)

अः द्विः

तरि ॥५२॥ जैथसन्यासीलसंकल्पलुटे ॥ लेथनियोगन्वेसारमेटे ॥ रेसेहें अनुपावन्विन
 धटे ॥ सान्वेजया ॥५३॥ स्कोका ॥ आसमुक्षोमुनिर्गिर्मकारणमुच्यते ॥ योगास
 उस्तत्स्वैवशमः कारणमुच्यते ॥५४॥ टोका ॥ आतांयोगान्वकान्वानिमथा ॥ जरिल
 कावा आधिपाथी ॥ तरिसोपानाया कर्मपथा ॥ उकासिमणे ॥५५॥ येषोयमनियमानेनल
 क्लवटे ॥ रिगें आसनामियेपाठलवाटे ॥ येयिप्राणायामानेनिआउकंरै वरौताग ॥५६॥
 मगप्रसाहारान्वाआधाऊ ॥ जोबुद्धिनियापायानिमर्तजा ॥ जैथहठियेसातिनिहोज ॥
 कडैलगा ॥५७॥ लहिं अभ्यासनेनिबुके ॥ प्रसाहागिरनिराछें ॥ नाखिलागेलठाके ॥ वै
 राघ्यावि ॥५८॥ रेसापवनान्वनपागरे ॥ येतांधारणाचेनिपेसारे ॥ क्रमिध्यानामिंवरेर
 सोडेलवं ॥५९॥ ममतयामागाविधावे ॥ पुरेलप्रवृत्तिमिहोवं ॥ जैथसाध्यासाधनाखेव

 जाः सग
१४१

(60)

समरसेंहोये॥५९॥ जिथपुठ्लौसुपारुखे॥ मागीलस्मरावेलेंगकें॥ रोमियेसरमियेसु
 माके॥ सामाधिराहे॥६०॥ यषेंउपायेयोगारुदु॥ जोनिरवधिजाल्प्रादु॥ तयानेयावि
 हानिवाइ॥ सांगैनआयिक॥६१॥ क्लका॥ यशाहिनंद्रियायेषुनकर्मस्वनुसज्जले॥
 मर्वेसंकल्प्यसन्यासीयोगारुठल्लदोयतो॥६२॥ टीका॥ तरिजयानेयाईद्रियांनियाघ
 रा॥ भाहिंविषयांवायेरसारा॥ जोआत्मबोधावांलोवरां॥ पङ्कडल्लभसे॥६३॥ जियाने
 सुखदुःखविनजांगे॥ मगटलेमानमचेवानेघे॥ विषयोपासिहीआलयांसैनरिगे॥
 हेकायत्त्वणौनि॥६४॥ ईद्रियेकर्मावांगायि॥ वाठनलिमरिकेत्विंफळहेतुविचाडना
 लो॥ अंतेकरणां॥६५॥ असलेनदेहेयतुला॥ जोस्वेलुविदिसेभिजेला॥ लोत्वियोगारुठक
 ला वोकरवलुं॥६६॥ तेथअर्जनत्यणौअंबंता॥ हेमजविस्मोबङ्गाईकतां॥ सांगै

(३)

अद्वीता

तयारे सियो भ्यला ॥ कवण्ठं दिजे ॥ ६६ ॥ श्लोक ॥ अहरै तामना तानुं मात्मान मव सादये
 त् ॥ आत्मै वस्थात्मनो वें धुरा त्मै वरि परामनः ॥ धारीका ॥ तवेहा मोनि हृष्टु ल्याण् ॥
 उम्मेन वर्लग्नाहें बोलपौ ॥ कवणा सिकाय दिजै लक्षण ॥ येथदै तिं इये ॥ ६७ ॥ पैव्यामो
 लात्तियेसेजे ॥ बाकियां अवि घानि द्रितां होयोजे ॥ तेहृष्टिदुःख प्रुहासु गीजे ॥ जन्मभृत्य
 को ॥ ६८ ॥ पाकिं अवसां लयेच वो ॥ लेते अवद्यं चिहोय घावो ॥ रेसाउपजे निसमझा वो
 तोहि आपणापां ॥ ६९ ॥ ल्यणौ निआपणनि आपणापयां ॥ घालु किजलु असैधनं जया ॥
 वित्तदेउनि नाथिलया ॥ देलाक्षि माना ॥ ७० ॥ श्लोक ॥ वें धुरा तामन रूल स्थयेन त्मै
 वामना भितः अनामन रूल शत्रुवेवतेतात्मेवश त्रुवलु ॥ ७१ ॥ धारीका ॥ लाविनु गृह
 नि अहे कारु सांउजे ॥ मग असति चिव रुहोयिजे ॥ लरि आपुलि स्वास्त्रासहजे ॥

गमलगी
॥ ८ ॥

(7A)

आपणकेलि ॥७१॥ ये हविं कौं सकि टी किये वियापरी ॥ तो आपणयां आपणवैरि ॥ जो
 आत्मबुद्धिशारी ॥ वारुस्थका ॥ ७२॥ कै से प्राप्ति वियवेके ॥ बिदे वो ओं पूर्णवेडोहो
 ले ॥ किं असैले आपुलेडोके ॥ आपण सांकि ॥ ७३॥ कांकडणी येकु अमलेपणे ॥ मालो
 नहे गावोर लालणे ॥ रेसानारि लासंदु अंलः कागणे ॥ घउनिगकं ॥ ७४॥ यह विहो
 लो विआहे ॥ परि कायी कि जेबुद्धितो सिनह्या ॥ देखा लाप्ति प्रवेनघाये ॥ किमरेसाव्ये ॥ ७५॥
 जेसीतेशुकम्बिन ओंगसोरे ॥ न किकामविन लियेरि मोहरे ॥ तरिनेपेंउजवेपरिनपु
 रे ॥ सनशंका ॥ ७६॥ वायांसि मानपिलि ॥ आवुंहिये आवाळि ॥ टटातुनकि ॥ धरानि
 गके ॥ ७७॥ लप्तें बोधलामींपुडे ॥ रेसैयेभावन बोंपडेवोडे ॥ किमोक क्लेयांपायांवा
 चवजा ॥ गोविअधिके ॥ ७८॥ रेसाकाजेविण ओंलुडला ॥ लोमांगपांकायिआणीकें बों

(8)

अः ईः मः

धर्मगोपादिजहिनेला॥ तोउनिआधा॥ ७९॥ स्पौनिआपणपूयां आपणनिरिपु॥
 जैषोवाटविलाहासकल्यु॥ यस्त्वयंबुद्धिलणिबपु॥ जोनाथिलेनघे॥ ८०॥ श्लोक॥ जि
 लासनः प्रशान्तस्यपरमामासमाहितः॥ शीतोक्ष्मसुखदुःख्वुतथामानापमानयोः
 ॥ ८१॥ टीका॥ तथास्वीतः कुरणजीलां सकलका मोपशांता परमात्मापरैता॥ दु
 रिगाहि॥ ८२॥ जैसाकिज्ञवादोष्ड्वाये॥ तरिपधरेत्विहोये॥ तेसंजिवा ब्रह्मत्वेऽग्नि
 है॥ संकल्पलोपि॥ ८३॥ ताघगकाराजैसा॥ निमात्मयां आकाशा॥ नल्गोमिकोजा
 ण्ठां आकाशा॥ आनागया॥ ८४॥ तेसादेलाहेकाल नाथिला॥ हासमूढजयामाना
 शला॥ तोविपरमात्मासंवला॥ आंदित्यआहे॥ ८५॥ आनांशीतोक्ष्मविमावाहा
 णि॥ तेष्ठसुखदुःख्वांभिकउसाणि॥ येमसमतिकाहिं बोलाणि मानापमानावं॥ ८६॥

सानः भः ग
॥ ८७॥ ईः म

(8A)

जैंजयावातसूर्यजये॥ तेउतेतैजन्विश्वहोये॥ तैसैयापावेलेजाहे॥ तोभित्यजौनि॥८१॥
 देखेमेघोनिसूर्यतिधारा॥ लियानरपत्ताजैसीयासागर॥ तैसीशुभाषुकैयोगीश्वरा
 नहकतिआने॥८२॥ श्लोक॥ ज्ञानविज्ञानलभाष्टस्थाविजिलेद्रियः॥ युक्तिरिक्त्य
 तैयोगीममलोष्टास्मकांस्वनः॥८३॥ टीका॥ जोहाविज्ञानलभकृसावो॥ नयाविवरीलांजा
 लवावो॥ मगलागलुजवपाहो॥ लवेज्ञानलेतोस्ति॥८४॥ आतांयापकुकिंयेकदेशी॥
 हेउहापूर्हजेरसि नेकराविवेदिअपैशि॥ दुजेनविणा॥८५॥ रेसाष्टरीरिम्बपरिक
 वलिकै॥ यरब्रह्मचिनपाउलुकै॥ जैपंजिसलियैकै॥८६॥ द्रियेगा॥८०॥ लोजिलेद्रियुसहजे॥
 लोक्योगसुक्त्याष्टजे॥ जणेमोनेथोरनल्लाष्टजे॥ कक्षणकाविं॥८७॥ देखेमेनयांवे
 निरवक॥ मेहयेसणेंटिसाठ॥ आष्टिभालियेनेउरवक॥ किंसरासैंभिमानि॥८८॥

(१)

अः दिराम

पाहानां प्रथा चं माक थोडे ॥ रेसें अनर्घीर लचोखउ ॥ देखेह गज वेन पोडे ॥ भाइ रेमा
 ॥ १३ ॥ श्लोका ॥ सुहृदि नित्रा यैदा सान मध्यस्थ है घाबंधु ॥ साधुष पित्र पापे तु मम
 बुद्धि विशिष्टते ॥ १४ श्लोका ॥ लेश सुत्तु आणि शत्रु ॥ कांउहासु आणि मात्र ॥
 लाफा वसेदविस्त्रु ॥ कल्यु कैन्वा ॥ १५ ॥ तया बंधु कोणि काह्या वा ॥ दृष्टियाक वणु लया वा
 मांविविश्वरेमाजया वा ॥ बैयु जाळा ॥ १६ ॥ मगलयावियेहृषी ॥ अधमोन्मम अ
 मेकिराटा ॥ कायि परिसाधिक सूबा ॥ तानियां किजे ॥ १७ ॥ नैरिपंधरेलं विहोये ॥ लैसे
 जिवा ब्रत्य लआहे ॥ सेकल्यु लायी जंते विश्वाकं काराचे विसरे ॥ जरी आडा
 ती आने आकारे ॥ लहीं घुलें ये कंवि तांगारे ॥ परेक्ष्ये ॥ १८ ॥ रेसों जाणपो जेव
 रवे ॥ लैफा चेल तयां आघवे ॥ लप्पोनि जाहान वाहान चेन मंकवे ॥ येणे आकार तित्रे ॥ १९ ॥

 शान्तश्चरि
॥ १ ॥

धापेपतमाजिद्यथि॥ दिसेतंकूविसैषसृष्टी॥ परितोयेकवंनूविगोग॥ दुजीनाहिं॥ १००॥
 रेसेप्रतिलिहेंगवसे॥ तेसाअनुपातजयांतंअस॥ लोविसमवुद्विहेंअनारिसे॥ नहेजाज्ञा
 ॥ १॥ जयानेनावंनीर्थरावो॥ दशनिंप्रशारसिरावा॥ जयानेनसंगैवाल्यकावो॥ भ्रातासी
 ॥ २॥ जयानेनिबोलेधर्मजिये॥ दिग्महासिद्वितंविये॥ देखेंस्वर्गमुखादिये रवेक्तज
 यान्वा॥ ३॥ विषयेंजरोआवलासिनां॥ वरिदेउपातियोग्यता॥ हेंअसोलयातेप्रशासि
 लां॥ लाकूआधि॥ धृपुडातिंअस्तविनारेसं॥ जयापाहालेंअद्वैतादिवसे॥ मगआपणां
 विआपणजसे भरवितिल॥ प्या॥ श्लोक॥ योगीषुजीवसतक्तमानंरहस्यतः॥ ए
 काकिमनस्त्वानिराजारपरिमहः॥ १०॥ श्लोक॥ ऐसियादृष्टिजोविवकि॥ पार्थी
 लोयेकाकी॥ सहजेंअपारमहिजेतिहिलेकिं॥ लोविल्लणोन॥ धरेसियेंअधारणे॥

(१०)

अः धाः

निष्ठन्नाविंलक्षणे॥ आपुलेनबद्धवसप्तेण॥ कलहत्पणे॥ ५॥ जोज्ञानियांवाऽबाप्तु॥ देखणे
 यांवियेदिर्मिचादिपु जयादादुलयावासंकल्ये विश्वरवि॥ ६॥ प्रणवावियेपैरे॥ जालं
 शब्दब्रह्ममाजिगे॥ ७॥ लिंजयावियायेशाधाकृटे॥ वेदुनपरे॥ ८॥ जे पाविनभगीकेलेजे॥ आ
 वौरविशाधिवियेवाणिजे॥ स्थणोनिजगतवेसजे॥ विष्णुअसैलया॥ ९॥ हांगानावियेचे
 कजयवि॥ पाहातांगगनहिसेहांचे॥ गुणयककवायिलयवि॥ काळिसिलकु॥ ११॥
 ल्यणोनिअसोहेवानप्ते॥ सांगोनेणकवणानिलक्षणे॥ दावाविंमिसैयेष्टे॥ कावोलि
 कुंने॥ १२॥ आयिकेदेनानागवोविद्युति॥ तेवेल्यविद्याकिजेलउघडि॥ तरीअर्जु
 भापटियेहेगोडि॥ नाशौलहन॥ १३॥ ल्यणोनितेनेसेवालणे॥ नहेसपालकआउलवणे
 केलेमनविवेगकवाचि॥ कोगावया॥ १४॥ जे यांसोहेप्तावोलोजटकु॥ मोक्षसुखाला

तानदवा
१४॥१५॥

(10A)

गौनिरंकु॥ तयान्वियेदिभ्वासणेंकङ्कु॥ लगेनुमियाप्रेमां॥ १५॥ विषयें अहं मावोयया
चाजाईल्॥ मौलेस्विहाहोयिल्॥ तरिमगकायिकेजेल्॥ येकलयां॥ १६॥ दिग्विषाहतों
निविजे॥ कांलोउकारुविवोलीजे॥ नानारदादुनिखेमदीजे॥ ऐसेकवणआहे॥ १७॥
आपुलियामनावरवि॥ असमायिगोष्टिजावि॥ तेकवणसिवावलावि॥ जरिरेक्यजा
ले॥ १८॥ याकाकूळतिजनाद्दैनं॥ अन्योपदेशस्विहातासने॥ वोल्लामाजिमनने॥
आळिंगुसरले॥ १९॥ हेंपरिसवांजरोकानउ॥ तरिजाणपांपार्थउघडै॥ स्लक्षसुख
चैंस्विरुपडे॥ वोललेंगा॥ २०॥ हेंभेदोवप्सोवियेसेवाटि॥ जैसेंचेकविवियेवांस्तोट
मगलेमोहाविधिपुस्ति॥ नावोंलगे॥ २१॥ लेसेंजालेंअनंला॥ ऐसेंलरिमानल्लाघानां
तरिलयानानेदखतां॥ अरतिशयोयेये॥ २२॥ पाहानावर्लकैमेंवोज॥ केंउपेदशके



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com